Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.10, May, 2024**

(An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal)

Knowledgeable Research

ISSN 2583-6633

Vol.02, No.10, May, 2024

http://knowledgeableresearch.com/

संस्कृत साहित्य में निरुपित भारतीय इतिहास

[1]डॉ.अरुण कुमार निषाद, [2]डॉ. शिखा अग्निहोत्री एवं [3]शिखारानी

[1]असिस्टेण्ट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग) मदर टेरेसा महिला महाविद्यालय, कटकाखानपुर, द्वारिकागंज, सुल्तानपुर|

[2]असिस्टेंट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग) हिन्दू कन्या महाविद्यालय, सीतापुर,

[3]शोध छात्रा संस्कृत तथा प्राकृत भाषा विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ |

Email: arun.ugc@gmail.com

****

शोधसार

इतिहासविषयक ग्रन्थों की रचना का उपक्रम संस्कृत साहित्य की विकासयात्रा में ईसा की द्वितीय सहस्राब्दी में महत्वपूर्ण प्रस्थान है | इन ग्रन्थों के द्वारा हमारी परम्परा में इतिहास की अवधारणा को भी उपस्थापित किया गया है | इतिहास शब्द का संस्कृत में अर्थ है-इति ह आस –जो होता आया है | इतिहास का अर्थ वह वृत्त है जो पहले से होता आया है, और आगे भी होता रह सकता है | पुराण उनकी पुनर्व्याख्या है | न्यायभाष्य में वात्स्यायन कहते हैं कि इतिहास का विषय लोकवृत्त है | अंग्रेजी में जिसे हिस्ट्री कहा जाता है | इतिहास जानने के साधनों में साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है | ऐतिहासिक दृष्टि से संस्कृत भाषा एवं साहित्य महत्त्वपूर्ण है |

बीज शब्द : *इतिहास लेखन, संस्कृत साहित्य, वैदिककाल, आधुनिककाल* | .

****

वैदिककाल से लेकर आधुनिककाल तक अनेक ग्रन्थ संस्कृत साहित्य में पड़े हुए हैं जिनमें वास्तविक इतिहास का अवलोकन किया ज सकता है और इनके अध्ययन से इतिहास लेखन कि त्रुटि को ठीक किया जा सकता है | |

1.बुद्धचरित –इस महाकाव्य में भगवान् बुद्ध के जन्म से लेकर निर्वाण तक उनका सम्पूर्ण चरित और उनके महान् सन्देश का 28 सर्गों में उदात्त निरूपण किया गया है |

[1]संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास,प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी,चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, प्रथम संस्करण 2020 ई.,पृष्ठ 215

Author Name: डॉ. अरुण कुमार निषाद, डॉ. शिखा अग्निहोत्री एवं शिखारानी

Acceptance Date: 11.05.2024

Publication Date: 28.05.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.10, May, 2024**
(An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal)

2.सौन्दरनन्द - यह अश्वघोष का दूसरा महाकाव्य है | सिद्धार्थ गौतम का भाई नन्द इसका नायक तथा उसकी पत्नी सुन्दरी इसकी नायिका है |

3.पद्मचूड़ामणि -इस महाकाव्य के प्रणेता बुद्धघोष हैं | पद्मचूड़ामणि में दस सर्ग तथा 641 पद्य हैं | बुद्ध के जन्म से लेकर बुद्धत्व की प्राप्ति तक का वर्णन इस महाकाव्य में है |

4.कप्फिणाभ्युदय - इसमें दक्षिण के राजा कप्फिण का वर्णन है | जिसका श्रावस्ती के राजा प्रसेनजित से विरोध है | इस महाकाव्य में 20 सर्ग हैं |

5-चन्द्रप्रभचरित - इसमें आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभ का वर्णन है | इसके प्रणेता आचार्य वीरनन्दि हैं |

6-वर्धमानचरित -वर्धमानचरित महाकाव्य के 18 सर्गों में महावीर स्वामी का वर्तमानभव (वर्तमान जन्म) व पूर्वभव (पूर्वजन्म) सहित समग्र जीवन चरित वर्णित है | वर्धमानचरित के प्रणेता असग कवि हैं |

7-मुद्राराक्षस- इस प्रणेता विशाखदत्त है | मुद्राराक्षस एक ऐतिहासिक नाटक है | इस सम्बन्ध मौर्यकाल से है |

---

[1]वही, पृष्ठ संख्या 219

[1]वही, पृष्ठ संख्या 222

[1]वही, पृष्ठ संख्या 270

[1]वही, पृष्ठ संख्या 280

[1]वही, पृष्ठ संख्या 288

[1]वही, पृष्ठ संख्या 310

Author Name: डॉ. अरुण कुमार निषाद, डॉ. शिखा अग्निहोत्री एवं शिखारानी
Acceptance Date: 11.05.2024
Publication Date: 28.05.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.10, May, 2024**
(An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal)

8- प्रियदर्शिका -इसके रचयिता हर्षवर्धन हैं | इसमें वत्सराज उदयन और आरण्यका (प्रियदर्शिका) की कथा है | इस नाटिका में चार अंक हैं |

9- रत्नावली - इस नाटिका के प्रणेता हर्षवर्धन हैं | इसमें वत्सराज उदयन और रत्नावली (सागरिका) के प्रेम और विवाह का वर्णन है | इसमें चार अंक हैं |

10-नवसाहसांकचरित –यह अट्ठारह सर्गों का महाकाव्य है | इसमें धारा नगरी के राजा सिन्धुराज (मुंज के अनुज) का वर्णन है | इस महाकाव्य के प्रणेता परिमल पद्मगुप्त हैं | नागकन्या शशिप्रभा और सिन्धुराज का प्रेम और विवाह इस महाकाव्य का मुख्य विषय है | परमार वंश के विषय में इससे महत्त्वपूर्ण साक्ष्य उपलब्ध होते हैं |

11-विक्रमांकदेवचरित - इसमें चालुक्य राजा विक्रमादित्य षष्ठ का वर्णन 18सर्गों में किया गया है | इसके प्रणेता बिल्हण हैं |

12-राजतरंगिणी-इसके प्रणेता महाकवि कल्हण हैं | राजतरंगिणी में आठ तरंगों में महाभारतकाल से लगाकर कल्हण के समय 1150 ई. तक का काश्मीर का इतिहास वर्णित है | राजतरंगिणी का अर्थ राजाओं की नदी है | इस नदी में हम राजाओं का उत्थान और पतन, आना और जाना उसी प्रकार देख सकते हैं जैसे हम नदियों के किनारे खड़े होकर उसकी लहरों का उठना और गिरना देखते हैं |

---

[1]वही, पृष्ठ संख्या 328

[1]वही, पृष्ठ संख्या 328

[1]वही, पृष्ठ संख्या 626-627

[1]वही, पृष्ठ संख्या 628

Author Name: डॉ. अरुण कुमार निषाद, डॉ. शिखा अग्निहोत्री एवं शिखारानी
Acceptance Date: 11.05.2024
Publication Date: 28.05.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.10, May, 2024**
(An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal)

13-रामपालचरित -इसके प्रणेता संध्याकर नन्दी हैं | बंगाल के पालवंशीय राजाओं के विषय में इस महाकाव्य से महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती है |

14.कुमारपालचरित - इसमें चालुक्यवंशीय राजाओं का इतिहास विस्तार से प्रस्तुत किया गया है | इस महाकाव्य के प्रणेता हेमचन्द्र हैं | इसमें 28 सर्ग हैं |

15.मूषकवंश -इस महाकाव्य के प्रणेता अतुल कवि हैं | इस महाकाव्य में 15 सर्ग हैं | इसमें केरल के राजाओं का वर्णन है |

16.पृथ्वीराजविजय -चण्डकवि द्वारा रचित इस महाकाव्य में केवल आठ सर्ग मिलते हैं | विद्वानों का मत है कि यह महाकाव्य अपूर्ण है |

17.पृथ्वीराजविजय -यह दूसरा महाकाव्य कश्मीर निवासी जयानक कवि द्वारा लिखा गया महाकाव्य है | इसके बारह सर्ग प्राप्त होते हैं |

18.मधुराविजय -यह कवयित्री गङ्गादेवी द्वारा विरचित महाकाव्य है | इस महाकाव्य में विजयनगर साम्राज्य की जानकारी प्राप्त होती है | इसमें राजा कम्पण या कम्पराय (गङ्गादेवी के पति) के मधुरा (मदुराई) विजय का वर्णन है | एक उदाहरण इस प्रकार है-

---

[1]वही, पृष्ठ संख्या 636-637

[1]वही, पृष्ठ संख्या 637

[1]वही,पृष्ठ संख्या 639

[1]वही,पृष्ठ संख्या 639

[1]वही,पृष्ठ संख्या 640

[1]वही,पृष्ठ संख्या 641

Author Name: डॉ. अरुण कुमार निषाद, डॉ. शिखा अग्निहोत्री एवं शिखारानी
Acceptance Date: 11.05.2024
Publication Date: 28.05.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.10, May, 2024**

(An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal)

य: शेष इव नागानां नगानां हिमवानिव |

दैत्यारिरिव देवानां प्रथम: पृथिवीभुजाम् ||

19.हम्मीरमहाकाव्य -इसके रचयिता नयचन्द्र सूरि हैं | इस महाकाव्य का नायक हम्मीर पृथ्वीराज चौहान का वंशज है | हम्मीर रणस्तम्भपुर (रणथम्भौर) का राजा था | इस महाकाव्य में 14 सर्ग हैं | यह करुण रस प्रधान महाकाव्य है | हम्मीर महाकाव्य संस्कृत के ऐतिहासिक महाकाव्यों में विशिष्ट स्थान रखता है |

20.महाचोलराजीय - षडक्षरीदेव द्वारा रचित इस महाकाव्य में दस सर्ग हैं | इस महाकाव्य में चोल राजाओं के विषय महत्त्वपूर्ण जानकारी है |

21.सुर्जनचरित -इस महाकाव्य के प्रणेता चन्द्रशेखर हैं | इसमें बूँदी के चौहानवंशी राजा राव सुर्जन का चरित्र वर्णित है | इस महाकाव्य में बीस सर्ग हैं|

22.वीरभानूदय -इस महाकाव्य के रचयिता माधव उरव्य हैं | अनेक ऐतिहासिक घटनाओं के प्रामाणिक निरूपण तथा बघेलखण्ड के इतिहास में प्रकाशन की दृष्टि से यह महत्त्वपूर्ण कृति है |

23-साहित्यरत्नाकर -इसमें तंजौर के राजा रघुनाथ का चरित्र चित्रण किया गया है | इस महाकाव्य में सोलह सर्ग हैं | इसके रचयिता यज्ञनारायण दीक्षित हैं|

---

[1]वही,पृष्ठ संख्या 643

[1]वही,पृष्ठ संख्या647

[1]वही,पृष्ठ संख्या 648

[1]वही,पृष्ठ संख्या 649

Author Name: डॉ. अरुण कुमार निषाद, डॉ. शिखा अग्निहोत्री एवं शिखारानी

Acceptance Date: 11.05.2024
Publication Date: 28.05.2024

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.10, May, 2024**
(An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal)

24-अमरसार -इसके प्रणेता जीवन्धर हैं | इसमें मेवाड़ के इतिहास के विषय में जानकारी है |

25-राजरत्नाकर - इसके प्रणेता सदाशिव नागर हैं | इस महाकाव्य में 23 सर्ग तथा 855 श्लोक हैं | कुम्भा,राणा साँगा, राणा प्रताप, अमरसिंह, जगतसिंह, राजसिंह इन राजाओं का वृत्तान्त इस महाकाव्य में प्रस्तुत किया गया है |

26-गढेशनृपवर्णनम् - इसमें गोंड राजाओं का वर्णन है | इसके रचयिता रूपनाथ झा हैं |

निष्कर्ष-

हम देखते हैं कि ऐतिहासिक दृष्टि से संस्कृत साहित्य चिन्तन परम्परा अत्यन्त समृद्ध है | समसामयिक परिप्रेक्ष्य में यदि इतिहास-दृष्टि से संस्कृत-साहित्य का अध्ययन किया जाए तो अनेक ऐतिहासिक गुत्थियों और उलझनों को सुलझाया जा सकता है, और भारत के वास्तविक इतिहास एवं संस्कृति को समाज के सम्मुख लाया जा सकता है |

---

[1]वही,पृष्ठ संख्या 649
[1]वही,पृष्ठ संख्या 650
[1]वही,पृष्ठ संख्या 651
[1]वही,पृष्ठ संख्या 654

Author Name: डॉ. अरुण कुमार निषाद, डॉ. शिखा अग्निहोत्री एवं शिखारानी
Acceptance Date: 11.05.2024
Publication Date: 28.05.2024